तीर्थ क्षेत्र परिचय

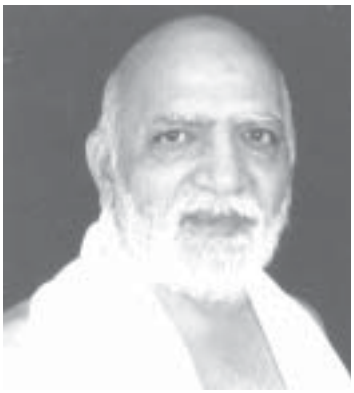

भगवान नेमिनाथ निर्वाण भूमि
''गिरनार''

-क्षुल्लक मोतीसागर जी

गुजरात प्रान्त में स्थित गिरनार पर्वत एक निर्वाणक्षेत्र के रूप में सुप्रसिद्ध तीर्थ है। षट्खण्डागम सिद्धान्तशास्त्र की आचार्य वीरसेन कृत धवला टीका में इसे क्षेत्र मंगल माना है। इसे ऊर्जयन्त गिरि भी कहते है।

ऊर्जयन्त क्षेत्र पर बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के तीन कल्याणक हुए थे-दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण। भगवान नेमिनाथ का निर्वाणस्थल एवं अन्य अनेकों करोडों मुनियों का निर्वाण स्थल होने से इसे सिद्धक्षेत्र कहा जाता है।

गिरनार पर्वत का नाम लेते ही महासती राजुल का नाम भी स्मृति में आ जाता है। जब भगवान नेमिनाथ जूनागढ़ से गिरनार की ओर राजुलमती से ब्याह करने के लिए चले, तो वहाँ पहुँचते हुए, मार्ग में बाडे में बंद पशुओं की करूण चीत्कार ने उन्हें द्रवित कर दिया तब वे वैराग्य उत्पन्न हो जाने से, विवाह बंधन में न फंसकर, गिरनार पर्वत पर जाकर, दीक्षा ले घोर तपश्चरण में लीन हो गए। तब महासती राजुल ने भी भगवान नेमिनाथ के पथ का अनुसरण करते हुए आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर, इसी पर्वत पर घोर तपश्चरण किया था ।

भगवान नेमिनाथ जिस स्थान से मुक्त हुए थे वह स्थान अत्यन्त पवित्र और लोकपूज्य था। उस स्थान के गौरव को सदाकाल के लिए अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इन्द्र ने वज्र से सिद्धशिला का निर्माण किया, और उस पर भगवान के चरण चिन्ह उत्कीर्ण किए।

इन्द्र ने जिस प्रकार भक्तिवश वज्र से भगवान के चरण चिन्ह अंकित किए थे उसी प्रकार उसने भक्तिवश गिरनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ की भव्य मूर्ति भी स्थापित की थी जिसका वर्णन आचार्य मदन कीर्ति यतिपति ने शासन चतुस्त्रिंशतिका में किया है। इन्द्र द्वारा स्थापित उस मूर्ति का क्या हुआ इसका कुछ पता नही चलता किन्तु श्वेताम्बर आचार्य राजशेखर सूरिकृत प्रबन्धकोष (वि.स. 1405) में रत्नश्रावक संबंधी एक प्रबंध में काश्मीर देश के नवहुल्ल पतन निवासी रत्न नामक जैन श्रीमंती द्वारा संघ सहित यात्रा करने का वर्णन आता है, जिन्होंने नेमिनाथ भगवान की अति प्राचीन मूर्ति के दर्शन के साथ उनका जलाभिषेक किया। प्रतिमा लेप की होने से वह गल गई जिससे उन्हे बडा पश्चाताप हुआ, उन्होंने उपवास किया। तब रात्रि में अम्बिका देवी ने प्रकट होकर उन्हें अन्य प्रतिमा स्थापित करने का आदेश दिया। तदनुरूप रत्नश्रावक ने 18 सोने की, 18 चांदी की ओर 18 पाषाण की प्रतिमाएं बनवाई। यदि इस प्रकरण को प्रामाणिक स्वीकार किया जाए तो मदनकीर्ति (वि.स. 1285) ने नेमिनाथ की जिस भव्य दिगम्बर मूर्ति का उल्लेख किया है वह वि.सं. 1405 में लिखित 'प्रबंधकोष' के अनुसार रत्न नामक यात्री के हाथों नष्ट हुई। इससे लगता है कि मदनकीर्ति के द्वारा उल्लिखित मूर्ति वि.सं. की 14-15 वीं शताब्दी तक अवश्य विद्यमान थी। संभव है, मदन कीर्ति ने उसके दर्शन भी किए हो किन्तु इतना तो निश्चित है ही कि वह मूर्ति दिगम्बर थी, और अत्यन्त आकर्षक थी ।

गिरनार के दूसरे शिखर पर अम्बा या अम्बिका देवी का मंदिर है। इस मंदिर की मान्यता जैनों और हिन्दुओं दोनों में ही है। मंदिर पर आजकल हिन्दुओं का अधिकार है। The Report on the Antiquities of Kathiawad and Kachha. P. 129 में Mr. Burgess ने मूलतः इस मंदिर को जैनों का बताया है। अम्बिका देवी के कई नाम जैन शास्त्रों में मिलते है-कूष्माण्डी, कूष्माण्डिनी, आम्रा देवी, अम्बा देवी, अम्बिका देवी। यह देवी तीर्थंकर नेमिनाथ की शासन देवी कहलाती है ।

गिरनार पर अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएं घटित हुई है, जिनका विशेष महत्व है। चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धनाचार्य गिरनार की यात्रा के लिए गए थे। अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ने भी यहाँ की यात्रा की थी। उनके पश्चात् एक महत्वपूर्ण घटना का गिरनार के साथ संबंध है, जिसके द्वारा जैन वाड.मय का इतिहास जुड़ा हुआ है। वह घटना इस प्रकार है-

गिरनार की चन्द्रगुफा में स्थित धरसेनाचार्य नन्दिसंघ की प्राकृत पट्टावली के अनुसार आचारांग के पूर्ण ज्ञाता थे। उन्हें इस बात की चिंता हुई कि उनके पश्चात् श्रुतज्ञान का लोप हो जाएगा, उस समय महिमानगरी में मुनि सम्मेलन हो रहा था। उन्होंने मुनि सम्मेलन को

अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखा फलस्वरूप व्युत्पन्न और विनयी दो मुनि पुष्पदंत और भूतबलि विद्या ग्रहण हेतु उनके पास पहुँचे, तब आचार्यश्री ने उनकी परीक्षा लेकर उन्हें सिद्धान्त सीखने योग्य समझकर ग्रंथ पढ़ा दिया जिसके फलस्वरूप षट्खण्डागम नामक महान ग्रंथ की रचना हुई। इस प्रकार सिद्धान्त ग्रंथों की विद्याभूमि गिरनार ही है। पुष्पदंत और भूतबलि ने गिरनार की सिद्धशिला पर बैठकर, मंत्र सिद्धि की थी। आचार्य कुन्दकुन्द भी गिरनार की वंदना करने आए थे ऐसा वर्णन ज्ञात प्रबोध एवं पाण्डवपुराण ग्रंथ में आता है। इसके अतिरिक्त सुगंधदशमी व्रत का कथानक भी यहीं से जुड़ा हे।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गिरनार पर्वत के ऊपर पाँच टोंके है। लगभग दो मील की चढ़ाई पर दिगम्बर मंदिर और धर्मशाला से कुछ पहले राजुल गुफा है। इस गुफा से आगे बढने पर दिगम्बर जैन धर्मशाला है। इसके आगे आहाते में 3 मंदिर और एक छतरी है। एक मन्दरिया में 4 फुट ऊँची खड़गासन भगवान बाहुबली की प्रतिमा है। पार्श्व में एक छतरी में कुन्दकुन्दाचार्य के चरण है, सामने दीवार में पंचपरमेष्ठी की 5 मूर्तियाँ बनी है। छतरी के पार्श्व में एक जिनमंदिर है। अहाते के प्रांगण में बडा मंदिर बना है।

दिगम्बर मंदिर से थोड़ा आगे बढ़ने पर गोमुखी गंगा है, एक गोमुख से जलधारा निकलते रहने से जल से कई कुण्ड बन गए हैं। गोमुख के पृष्ठ भाग में एक वेदी पर तीर्थंकरों के 24 चरणचिन्ह बने हुए है। यह प्रथम टोंक कहलाती है। इस पवित्र कल्याणक स्थान पर हिन्दुओं ने अधिकार कर रखा है। इस गोमुख गंगा के निकट ही सहस्राम्रवन (भगवान नेमिनाथ की दीक्षा भूमि) को मार्ग जाता है। यहाँ से कुछ आगे चलने पर राखंगार के दुर्ग का द्वार मिलता है। द्वार के बायीं ओर नेमिनाथ का विशाल और दर्शनीय मंदिर है। 900 सीढ़ी चढ़कर द्वितीय टोंक है जहाँ अनिरूद्ध कुमार के चरण है, इसके निकट ही अम्बा देवी का विशाल मंदिर है तीसरी टोंक शम्बुकुमार की है।

तीसरीं टोंक से 1500 सीढ़ियाँ चढ़ने और उतरने पर चौथा टोंक है। इस पर्वत की चोटी पर शिला में प्रद्युम्न कुमार के चरण बने है, चरणों के निकट ही एक फुट ऊँची मूर्ति बनी हुई है पाँचवी टोंक पर भगवान नेमिनाथ के चरण है जिन्हें हिन्दू लोग दत्तात्रेय कहते है, चरणों के पीछे भगवान नेमिनाथ की भव्य दिगम्बर प्रतिमा विराजमान है, यह पाँचो टोंक व नेमिनाथ मंदिर सरकार के पुरातत्तव विभाग के अधिकार में है। यहाँ से गये हुए मार्ग से ही वापस लौटकर सहस्राम्रवन (प्रथम टोक) के लिए सीढ़ियाँ जाती है। इस दीक्षावन में एक छतरी के नीचे चरण बने है, यहाँ से कच्चा मार्ग धर्मशाला के लिए जाता है जो कि कष्टकर है अतः सीढ़ियों द्वारा ही मुख्य मार्ग से नीचे आना चाहिए।

नीचे तलहटी में दिगम्बर जैन धर्मशाला में एक जिनालय है, धर्मशाला में अनेक कमरे हैं और यात्रियों की सुविधा हेतु समुचित व्यवस्था है, आचार्यश्री निर्मलसागर महाराज की प्रेरणा से गिरनार तीर्थ का विकास हुआ है। वर्तमान में भी वहाँ ''निर्मलध्यान केन्द्र'' नामक संस्था के द्वारा नवनिर्माण आदि कार्य चल रहे है। पहाड़ के ऊपर प्रथम टोंक पर बनी धर्मशाला मे 6 कमरे है। इसी प्रकार जूनागढ़ में भी ऊपर कोट के निकट क्षेत्र की एक धर्मशाला है इसमें भी यात्रियों हेतू सभी सुविधाएं है। क्षेत्र कार्यालय जूनागढ़ के जगमाल चौक में है। इस प्रकार भगवान नेमिनाथ की त्रयकल्याणक भूमि व अनेक मुनियों की सिद्धभूमि सभी के लिए कल्याणकारी होवे यही भावना है।